**ज़िन्दगी बनाने के लिए**

घर से दूर निकल आया हूं,

सपनो को पाने की चाहत में

अपनों को दूर छोड़ आया हु,

सुख साधन कितने ही समेट लू

मेरा घर आज भी याद आता है,

चाहू तो साडी दुनिया को नाप लू

आखिर में माँ के हाथ का खाना याद आता है,

कमी का जब कोई ठिकाना नहीं

तोह बचपन के चिल्लर याद आते है,

परदेस आना था मुझे अब दूर चला आया हूं,

अब तो मेरा सेहर मुझे याद आता है,

बीमार आज जब होता हु तो इलाज तो मिल जाता है

पर जब दावा ना काम आती

तो माँ का प्यार याद आता है,

अब तो बस कोसता हु अपने आप को

आखिर क्या करने चला आया हू,

ज़िन्दगी बनाना चाहता था मैं और,

ज़िन्दगी से ही दूर चला आया हू.

किशोर पाठक